

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

पारा (02) सयकूल

(i) तहवीले क़िब्ला

मदीना की तरफ़ हिजरत करने के बाद 16 या 17 महीने तक बैतुल मुक़द्दस ही क़िब्ला रहा। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़्वाहिश थी कि ख़ाना ए काबा क़िब्ला हो। अल्लाह तआला ने यह ख़्वाहिश पूरी कर दी। (144)

(ii) बीच की उम्मत

यह उम्मत बीच की उम्मत है इसलिए कि यह लोगों पर गवाह है और रसूल इस उम्मत पर गवाह है (143)

(iii) आयाते बिर और अबबाबे बिर

لَيْسَ الْبِرُّ أَنْ تُولُّوا وُجُوهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ

(सूरह 2 अल बक्ररह आयत 177)

यह आयत आयते बिर कहलाती है। इसमें तमाम अहकामात, अक्राएद, इबादात, मुआमिलात, मुआशरत और अख़लाक़ का संक्षेप में वर्णन है। आगे अब्बाबे बिर में विस्तार पूर्वक वर्णन है

(1) सफ़ा मरवा की सई (हल्की दौड़) (2) हराम करार दिया गया मुर्दार, खून, सुअर का मांस, और जो अल्लाह के इलावा किसी और के नाम पर ज़बह किया गया हो, (3) क़िसास (बदला), (4) वसीयत, (5) रोज़े, (6) एतेकाफ़, (7) हराम कमाई, (8) क्रमरी (चांद की) तारीख़ (9) जिहाद (10) हज्ज (11) इनफ़ाक़ फ़ी स बीलिल्लाह, (अल्लाह के रास्ते में खर्च करना) (12) हिजरत, (13) शराब और जुवा, (14) मुशरेकीन से निकाह, (15) हैज़ में संभोग, (16) ईला (बीवियों से अलग रहने की क़सम खाना), (17) तलाक़, (18) इदत, (19) रज़ाअत (दूध पिलाने की मुद्दत), (20) महर (21) हलाला, (22) इदत गुज़ारने वाली औरत को निकाह का पैग़ाम देना।

(iv) मोमिनों की आजमाइश और सब्र

जन्नत की मंजिल आसान नहीं है, ईमान लाने वाले यह न समझें कि उन्हें दुनिया में ऐसे ही छोड़ दिया जाएगा बल्कि खौफ़, भूख, जान, माल और और रोजगार में घाटा डाल कर उन्हें आजमाया जाएगा। इनसे पहले के लोगों को भी ऐसी तकलीफ़ और परेशानियों के डाला गया, और उन्हें इस क्रूर हिला मारा गया कि रसूल और उनके मानने वाले पुकार उठे कि अल्लाह की मदद कब आएगी? लेकिन उन संगीन हालात में जो सब्र और नमाज़ से मदद ले उसे जन्नत की खुशखबरी भी सुनाई गई है और मोमिन तो वास्तव में वही है जो हर मुसीबत और ग़म पर **إِنَّا لِلّٰهِ وَإِلَيْهِ رُجْعُونَ** (हम अल्लाह ही के हैं और अल्लाह ही की तरफ़ पलटकर जाना है) पढ़े। (153 से 156)

(v) कुरआन के पैग़ाम को छुपाने वालों पर अल्लाह की लानत

"जो लोग अल्लाह की रौशन तालीमात [खुली शिक्षाओं] और हिदायतों को छुपाते हैं उन पर अल्लाह भी लानत करता है और सभी लानत करने वाले भी उनपर लानत करते हैं। इसके इलावा जो लोग मुख्तलिफ़ तरीक़ा से कुरआन की आयतों का व्यपार करते हैं वह अपने पेट में आग भरते हैं। (आयत 159 और 174)

(vi) अल्लाह अपने बंदों से बहुत करीब है

मेरे बन्दे अगर तुमसे मेरे बारे में पूछें तो उन्हें बता दो कि मैं उनसे करीब ही हूँ। पुकारने वाला जब मुझे पुकारता है, मैं उसकी पुकार सुनता और जवाब देता हूँ। (आयत 186)

(vii) तलाक़ के नियम

◆ तीन तलाक़ तीन बार में है। दो बार तीन मासिक धर्म के अंदर रूजूअ किया जा सकता है। तीसरी बार में रूजूअ की कोई गुंजाइश बाक़ी नहीं रहती, ◆ तलाक़ मासिक धर्म में नहीं बल्कि पाकी को हालत में दी जाय, ◆ एक बार में एक तलाक़ दी जाय, ◆ एक तलाक़ के बाद, 'इदत तीन मासिक धर्म होगी। ◆ पहले और दूसरे तलाक़ के बाद इदत के दौरान बीवी अपने शौहर के साथ ही रहेगी ताकि वह दोनों अगर चाहें तो रूजूअ कर सकें। ◆ रूजूअ करने में बीवी को किसी भी क्रिस्म की तकलीफ़ पहुंचाना हरगिज़ मक़सूद न हो, ◆ अगर रूजूअ न किया हो तो भी इदत गुज़रने के बाद उन्हें अख़्तियार होगा कि वह चाहें तो दोनों दोबारा निकाह कर सकते हैं, ◆ तीन तलाक़ के बाद शौहर और बीवी दोनों का निकाह नहीं हो सकता जबतक कि उस औरत का निकाह किसी और मर्द से बग़ैर किसी

शर्त के हो और वह तलाक़ दे दे या उसकी मृत्यु हो जाय तो फिर उस औरत का निकाह पहले शौहर से हो सकता है, ♦ एक बार में तीन तलाक़ देना वास्तव में शरीअत का मज़ाक़ उड़ाना है, ♦ हलाला का मौजूदा रायेज तरीक़ा हराम है क्योंकि शर्तिया शादी इस्लाम में हराम है। शर्तिया निकाह के कारण ही मुतआ हराम है।

♦ इदत के दौरान गर्भ को औरतें किसी से न छुपाएं क्योंकि अगर गर्भ है तो बच्चा पैदा होने के बाद ही किसी से निकाह हो सकता है। (227 से 232)

(viii) किस्सा तालूत

बनी इस्राईल में इस क्रूर बिगाड़ आ गया था कि एक नबी के अपने दरम्यान मौजूद होते हुए उनसे एक बादशाह बनाने की मांग कर रहे थे लेकिन जब तालूत को बादशाह बना दिया गया तो बहुत कम लोगों ने तालूत की बात मानी लेकिन उन्होंने तादाद में कम होने के बावजूद अल्लाह के हुक्म से जालूत के लश्कर को परास्त कर दिया। (246 से 251)¹

(ix) और इब्राहीम की दुआ कुबूल हो गई

इब्राहिम अलैहिस्सलाम ने जो दुआ की थी कि "ऐ रब ! इन लोगों में खुद इन्हीं की क्रौम से एक ऐसा रसूल उठा" वह दुआ कुबूल हो गई और अल्लाह ने इस्माइल अलैहिस्सलाम की नस्ल क़ुरैश में उन्हीं में से मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आखिरी नबी बना कर भेजा

“हमने तुम्हारे बीच खुद तुम में से एक रसूल भेजा, जो तुम्हें हमारी आयतें सुनाता है, तुम्हारी ज़िंदगियों को सँवारता है, तुम्हें किताब और हिकमत [तत्त्वदर्शिता] की तालीम देता है, और तुम्हें वो बातें सिखाता है जो तुम न जानते थे” (आयत 151)